

नये नियम का इतिहास, साहित्य और धर्मशास्त्र

सत्र 10: मार्क, भाग 2, मनुष्य का पुत्र और मसीहाई रहस्य

डॉ. टेड हिल्डेब्रांट द्वारा

यह डॉ॰ टेड हिल्डेब्रांट द्वारा न्यू टेस्टामेंट इतिहास, साहित्य और धर्मशास्त्र पाठ्यक्रम में दिया गया व्याख्यान है; यह व्याख्यान मार्क की पुस्तक, मनुष्य का पुत्र और मसीहाई रहस्य पर आधारित है।

ए. नायक के रूप में पीटर का परिचय और बहिष्कार [00:00-3:10]

A: संयुक्त AC; 00:000-8:39 मार्क में पीटर

पिछली बार जब हम चर्चा कर रहे थे, तो हम अंततः मार्क की पुस्तक में पहुँचे, जो यीशु मसीह को प्रभु के अद्भुत सेवक के रूप में चित्रित कर रहा था। हमने मार्क और मार्क के व्यक्तित्व और एक युवा व्यक्ति के रूप में उनकी पृष्ठभूमि, उनके बड़े चचेरे भाई बरनबास के साथ उनके रिश्ते और पॉल और बरनबास के साथ पहली मिशनरी यात्रा पर जाने पर ध्यान केंद्रित किया था। छोड़ने के बाद पॉल और जॉन मार्क के बीच दरार आ गई, जिसने वास्तव में बरनबास और पॉल के रिश्ते को तोड़ दिया। फिर अपने जीवन के अंत में, रोम में पीटर के साथ फिर से मिलना, और पीटर ने मार्क को अपने बेटे, अपने "पुत्र, आध्यात्मिक बेटे" के रूप में देखा। फिर 2 तीमुथियुस 4:11 में पॉल के साथ अपने जीवन के अंत में यह महसूस करते हुए और कहते हुए जुड़ना, "मैं मार्क को वापस चाहता हूँ, वह मेरे लिए सेवकाई में लाभदायक है।" यह जॉन मार्क के जीवन के अंत में बड़े विभाजन के बाद सुलह को दर्शाता है, इसलिए पॉल के जीवन के अंत में।

अब मैं आंतरिक साक्ष्यों के संदर्भ में कुछ सामान्य बातों पर नज़र डालना चाहता हूँ। अगर, जैसा कि पापियास कहते हैं, जॉन मार्क पीटर के अनुवादक, दुभाषिया के रूप में लिख रहे हैं, और पीटर की कहानी और एक अर्थ में सुसमाचार लिख रहे हैं, तो मुझे लगता है कि निम्नलिखित बातें दिलचस्प हैं।

मार्क की पुस्तक में, पीटर के बारे में कुछ बातें छोड़ दी गई हैं, और उनमें से एक है उसका पानी पर चलना। जब यीशु पानी पर चलते हैं, तो यह मैथ्यू अध्याय 14 में है, पीटर नाव से बाहर

निकलता है और यीशु के पास जाता है, और यह एक अनोखी बात है, बाकी शिष्य नाव में रहते हैं और पीटर बाहर निकलता है। पानी पर चलने की वह कहानी मार्क की पुस्तक में नहीं मिलती है। यह पीटर की कहानी है, यह दिलचस्प है। मैथ्यू 16 में राज्य की चाबियों का वादा यहाँ उल्लेखित नहीं है। “‘‘लोग मुझे कौन कहते हैं?’’ पीटर कहता है, “‘‘तुम मसीह हो, जीवित परमेश्वर का पुत्र,’’ और यीशु कहते हैं, “‘‘तुम पीटर हो, इस चट्टान पर, मैं अपना चर्च बनाऊंगा,’’ और पीटर को राज्य की चाबियाँ मिलती हैं। उस कहानी का मार्क की पुस्तक में बिल्कुल भी उल्लेख नहीं है। मंदिर कर, मैथ्यू 17, इस मंदिर कर का उल्लेख करता है। “‘‘क्या आपका स्वामी मंदिर कर का भुगतान करता है?’’ पतरस ने कहा, “‘‘बेशक वह करता है।’’ वह यीशु के पास गया और कहा, “‘‘हे यीशु, क्या आपने मंदिर का कर चुकाया?’’ यीशु ने कहा, “‘‘नीचे जाओ और एक मछली पकड़ो। जब तुम मछली को बाहर निकालोगे तो तुम्हें एक सिक्का मिलेगा।’’ वह सिक्का केवल यीशु और पतरस के लिए भुगतान करना है। अन्य 11 के लिए नहीं, केवल पतरस और यीशु के लिए। तो यह मंदिर कर है। पतरस फिर से यीशु के साथ एक अनोखी तरह की स्थिति में है। उन कहानियों में से कोई भी जहाँ पतरस नायक है और यीशु के साथ एक अनोखा रिश्ता दिखाता है, मार्क की पुस्तक में उल्लेख नहीं किया गया है।

बी. पतरस की गलतियों का समावेश [3:10-5:06]

दूसरी ओर, पीटर की तीन गलतियाँ हैं, जब पीटर ने इसे गड़बड़ कर दिया। उसी अध्याय में जब यीशु कहते हैं, “‘‘तुम पीटर हो, मैं इस चट्टान पर अपना चर्च बनाऊंगा,’’ थोड़ी देर बाद, यीशु उन्हें बता रहे हैं कि उन्हें पीड़ा सहनी पड़ेगी, कि वह मरने जा रहे हैं। तब पीटर ने यीशु को फटकार लगाई और कहा, “‘‘यीशु तुम पीड़ा सहन नहीं करोगे और मरोगे नहीं। तुम मसीहा हो,’’ और यीशु पीटर की ओर मुड़ते हैं और कहते हैं, “‘‘शैतान, मेरे पीछे हट जाओ!’’ वह अंश फिर मार्क की पुस्तक में पाया जाता है।

रूपांतरण भी कुछ ऐसा ही है; पीटर, जेम्स और जॉन यीशु के साथ रूपांतरण पर्वत पर जाते हैं। मूसा और एलिय्याह वहाँ दिखाई देते हैं और यीशु चमकदार सफेद रंग के होते हैं और उनके सामने उनका रूपांतरण होता है। फिर पीटर, हमेशा की तरह, बात करते हुए कहते हैं, “‘‘चलो तीन

सुखा बनाते हैं, चलो तीन झोपड़ियाँ बनाते हैं: एक मूसा के लिए, एक एलिय्याह के लिए और एक तुम्हारे लिए।" फिर अचानक स्वर्ग से यह आवाज़ नीचे आती है और कहती है, "एक मिनट रुको, मूसा और एलिय्याह नहीं, यह मेरा बेटा है।" इस स्वर्गीय आवाज़ ने उसे सीधा किया। यह रूपांतरण है। फिर से यह मार्क की पुस्तक में पाया जाता है।

अंत में पतरस का इनकार है, जब मुर्गा बांग देता है और पतरस तीन बार प्रभु को अस्वीकार करता है और मुर्गा बांग देता है और पतरस उन दासियों से प्रभु को अस्वीकार कर रहा है जो कह रही हैं, "तुम गलील से हो, तुम इस आदमी को जानती हो।" पतरस कसम खाता है कि वह यीशु को नहीं जानता और इनकार करता है। फिर पतरस बाहर जाता है और फूट-फूट कर रोता है।

ये तीन बातें मार्क की किताब में हैं। हालांकि यह थोड़ा अजीब है, मुझे लगता है कि हममें से बहुतों के लिए जब आप कोई गलती करते हैं और कुछ गड़बड़ कर देते हैं तो आप उसे तब से बेहतर तरीके से याद रखते हैं जब आपने कुछ अच्छा किया था। तो यह सिर्फ नकारात्मक लगता है - अक्सर मैं छात्रों की समीक्षा कर रहा होता हूँ, और आपको छात्रों की शानदार समीक्षा मिलती है, फिर आपको एक खराब समीक्षा मिलती है जहाँ व्यक्ति आपको भड़काता है और मूल रूप से आपको वह व्यक्ति याद रहता है जिसने कक्षा का आनंद लेने वाले सौ लोगों में से एक को भड़काया था। यह बस ऐसे ही हैं जैसे हम हैं।

सी. पीटर का दर्शन और स्वच्छ पशुओं और धर्मशास्त्रीय ईमानदारी पर मार्क की टिप्पणी

[5:06-8:39]

तो पतरस ने ऐसा कहा। अब यहाँ पतरस की टिप्पणी है, और मुझे लगता है कि अध्याय 7 में इस कथन के संदर्भ में यहाँ जो कुछ भी आता है वह दिलचस्प है, और मुझे इसे यहाँ पाठ से ही पढ़ना चाहिए। मार्क अध्याय 7 पद 19; और ऐसा लगता है - और मुझे बस थोड़ा सा समझाना चाहिए; जब प्रेरितों के काम की पुस्तक में पतरस को एक दर्शन होने वाला था, जहाँ ये जानवर नीचे आने वाले थे, और वे वहाँ अशुद्ध जानवर थे, और मूल रूप से स्वर्गीय आवाज़ या जो कुछ भी कहने वाला था, "पतरस उठो और इन अशुद्ध जानवरों को खाओ।" पतरस ने इस पर आपत्ति जताते हुए कहा, "अरे, ये होंठ कोषेर आदमी हैं, मैंने कभी भी किसी अशुद्ध चीज़ को नहीं छुआ है।" तो पतरस

ने वास्तव में अशुद्ध जानवरों के खाने पर आपत्ति जताई और फिर अंत में आवाज़ ने कहा, "नहीं पतरस, तुम अशुद्ध मत कहो जिसे मैं शुद्ध कहता हूँ।" यह अन्यजातियों के साथ काम करने से संबंधित था, और क्या अन्यजातियों को कोषेर खाना है, और क्या अन्यजातियों को खतना करवाना है। और इसलिए पॉल और पीटर और अन्य, प्रेरितों के काम 15 में यरूशलेम परिषद, वे इस धारणा पर काम कर रहे थे कि क्या अन्यजातियों को कोषेर खाना चाहिए और क्या उन्हें खतना करवाना चाहिए। उन्होंने फैसला किया "नहीं, उन्हें खतना करवाने की ज़रूरत नहीं है, और उन्हें कोषेर खाने की ज़रूरत नहीं है।" तो आपको मार्क में यह कथन मिलता है जो पीटर से थोड़ा सा जोड़ा हुआ लगता है जो कहता है, "जब वह भीड़ को छोड़कर घर में गया, तो उसके शिष्यों ने उससे इस दृष्टांत के बारे में पूछा। उसने पूछा, 'क्या तुम इतने मूर्ख हो, क्या तुम नहीं देखते कि कोई भी चीज़ जो बाहर से मनुष्य में प्रवेश करती है, उसे अशुद्ध नहीं कर सकती। क्योंकि यह उसके हृदय में नहीं, बल्कि उसके पेट में जाती है और उसके शरीर से बाहर निकलती है।'" और कोष्ठक में आप पढ़ते हैं, "यह कहते हुए, यीशु ने सभी खाद्य पदार्थों को शुद्ध घोषित किया।" तो ऐसा लगता है कि पतरस ने यरूशलेम परिषद से पहले प्रेरितों के काम की पुस्तक में जो स्वर्गीय दर्शन देखा था, उसे देखते हुए यह कुछ ऐसा ही था। तो हम बस इतना कह रहे हैं कि ऐसा लगता है कि यह कथन पतरस ने प्रेरितों के काम अध्याय 10 और 11 से लिया होगा।

मुझे इस बारे में जो पसंद है वह है पवित्रशास्त्र की ईमानदारी, सत्यनिष्ठा और स्पष्टता। बहुत सी अन्य पुस्तकों और प्राचीन निकट पूर्वी दस्तावेजों में, महान राजा को एक अद्भुत व्यक्ति के रूप में दर्ज किया गया है जो ये सभी अद्भुत कार्य करता है, और इस महान नायक को लगभग बिना किसी दोष के चित्रित किया गया था। जबकि हम देखते हैं, पवित्रशास्त्र में, यहाँ पीटर है, जो सबसे बड़े प्रेरितों में से एक है (आप जानते हैं कि पीटर, जेम्स और जॉन यीशु के सबसे करीबी हैं), और पीटर के सबसे करीबी होने के कई बिंदु हैं; हालाँकि कुछ लोग जॉन से बहस करते हैं, लेकिन पवित्रशास्त्र की ईमानदारी यह है कि सभी प्रेरित, चर्च के शीर्ष पर बैठे ये सभी बारह लोग, जो इस्राएल के गोत्रों का न्याय करने के लिए बारह सिंहासनों पर बैठने वाले हैं, उन सभी बारह में समस्याएँ हैं। इसलिए बाइबल मूल रूप से यही बताती है, और मुझे लगता है कि मुद्दा मनुष्यों से दूर जाना और यह कहना है कि हम सभी मनुष्यों में समस्याएँ हैं, और बाइबल ऐतिहासिक रूप से

सटीक है। दूसरे शब्दों में, बाइबल हमें कोई झूठी कहानी नहीं दे रही है, यह हमें इस महान नायक की कोई पौराणिक कहानी नहीं दे रही है, लेकिन यह हमें बता रही है कि इस नायक में भी हम सभी की तरह ही खामियाँ हैं। अतः यह इस बात की ओर संकेत करता है और मेरा मानना है कि यह इन दस्तावेजों की ऐतिहासिकता की ओर संकेत करता है; कि इन्हें किसी को अच्छा दिखाने के लिए नहीं तैयार किया गया है।

D. मरकुस कब लिखा गया था? [8:39-10:58]

बी: संयुक्त DE; 8:39-15:53; तिथि और चमत्कार

तो, मार्क कब लिखा गया था? पीटर, पीटर कनेक्शन, पीटर की मृत्यु संभवतः 65 ई. के आसपास होने वाली है। पीटर रोम में मरने वाला है, जैसा कि हमने कहा, उल्टा क्रूस पर चढ़ाया गया। इसलिए आपको जो चाहिए, वह यह है कि पीटर को मार्क के सुसमाचार की पुष्टि करने के लिए आसपास रहना होगा, दूसरे शब्दों में, पीटर संभवतः उस मार्क पर अपनी मुहर लगाने जा रहा है, कि उसने जो लिखा, वह सही था। इसलिए मैं कहना चाहता हूँ कि संभवतः मार्क को 65 से पहले, निश्चित रूप से, पीटर की मृत्यु से पहले धकेल दिया जाता है। तो यह एक तरह की कालानुक्रमिक सीमा होगी।

समकालिक क्रम, अब यह समकालिक क्या है? समकालिक, सिन-ऑप्टिक, ऑप्टिक का अर्थ है "आंख" एक ऑप्टोमेट्रिस्ट की तरह। सिन-ऑप्टिक का अर्थ है "एक आंख से।" मैथ्यू, मार्क और ल्यूक को समकालिक गॉस्पेल कहा जाता है। वे मसीह को एक आंख से देखते हैं। मार्क की बहुत सारी सामग्री, शायद मार्क का 80, 90% (हम इसे बाद में देखेंगे) मैथ्यू और ल्यूक में पाया जाता है जिसे मैथ्यू, मार्क और ल्यूक के बीच साझा किया जाता है। वे यीशु की एक ही कहानी बताते हैं। तो आपको यीशु की यही कहानी मिलती है, समकालिक गॉस्पेल, मैथ्यू, मार्क और ल्यूक आपको एक ही कहानी बताते हैं। फिर जॉन आता है, और जॉन आपकी दूसरी आंख की तरह होने वाला है।

इसलिए आज के समय में सिनॉप्टिक गॉस्पेल में ज़्यादातर लोग मार्कन को प्राथमिकता देते हैं, यानी मार्क पहले आए और मैथ्यू और ल्यूक ने मार्क को आधार बनाया। इसलिए कुछ लोगों का मानना है कि यह मार्क को 40, 45 या 50 ईस्वी तक पीछे धकेल देगा। आप जानते हैं, जहाँ तक

मार्क के पहले गॉस्पेल होने का सवाल है, मैथ्यू और ल्यूक उसके बाद लिख रहे हैं। इसलिए, मार्क शायद सबसे पहले का है।

ई. चमत्कार और भविष्यवाणी पर आलोचकों की प्रतिक्रिया [10:58-15:53]

अध्याय 13 की आयत 2 में दिलचस्प बात यह है कि मार्क यह बयान करता है: "क्या तुम इन सभी इमारतों को देखते हो? यीशु ने उत्तर दिया, 'यहाँ एक भी पत्थर दूसरे पर नहीं रखा जाएगा। यहाँ हर एक पत्थर गिरा दिया जाएगा।'" यीशु मंदिर के सामने जैतून के पहाड़ पर बैठे थे।

यहाँ दिलचस्प बात यह है कि मंदिर 70 ई. में नष्ट होने जा रहा है। अब आलोचक - आलोचक बाइबल के बारे में दो बातों से नफरत करते हैं, जब आलोचक बाइबल को देखते हैं तो दो चीजें हैं जो उन्हें पागल कर देती हैं। एक है चमत्कार। तो आप बाइबल में चमत्कारों को देखें, आलोचकों को चमत्कारों से छुटकारा पाना होगा: तो पीटर का पानी पर चलना, यीशु का मृतकों में से उठना (उनके लिए एक आध्यात्मिक पुनरुत्थान बन जाता है), यीशु का चंगा करना, एक छोटी लड़की को मृतकों में से जीवित करना, लाजर को मृतकों में से जीवित करना, यीशु का एक कोढ़ी को चंगा करना; और 5,000 लोगों को भोजन कराना। उन्हें उन चमत्कारों से छुटकारा पाना होगा; वैसे हमें पुराने नियम में भी बहुत सारे चमत्कार मिलते हैं: मूसा, लाल सागर पार करना और यहोशू का यरीहो के चारों ओर घूमना और दीवारें गिरना। बहुत सारे उदाहरण हैं: एलिजा और एलीशा का चमत्कार करना, और स्वर्ग से बिजली गिरना। तो मूल रूप से आलोचकों को चमत्कारों से छुटकारा पाना होगा क्योंकि आलोचक कहते हैं कि सब कुछ वैसा ही स्थापित है जैसा कि वह है। दूसरे शब्दों में, प्राकृतिक कारण और प्रभाव के नियम, वैज्ञानिक नियम अलग-अलग नहीं होते। चमत्कार उससे बाहर हैं। चमत्कार उससे बाहर हैं, इसलिए वे कहते हैं कि चमत्कार नहीं हो सकते, और उन्हें बाइबल से चमत्कारों को हटाना पड़ा।

दूसरी चीज़ जिससे उन्हें छुटकारा पाना है, वह है भविष्यसूचक भविष्यवाणी। शास्त्रों में आपके पास ये भविष्यवाणियाँ हैं, उदाहरण के लिए, 1 राजा 13 में, जहाँ लिखा है "योशियाह पुजारी की हड्डियों को वेदी पर जलाएगा," और योशियाह उसके बाद 300 साल तक जीवित नहीं रहेगा। तो यह भविष्यवाणी योशियाह के रहने से 300 साल पहले की गई थी और यहाँ तक कि यह भी बताया

गया है कि वह क्या करेगा और उसका नाम भी बताया गया है। साइरस के साथ भी यही बात है, आप देखना चाहेंगे कि लोग साइरस और यशायाह की पुस्तक में साइरस पर की गई भविष्यवाणियों को लेकर वाकई पागल हो जाएँ। क्योंकि यह भविष्यवाणी करता है, साइरस लगभग एक मसीहा की तरह होगा, प्रभु का सेवक और अभिषिक्त व्यक्ति। यह बताता है कि यशायाह के समय से साइरस क्या करेगा। तो फिर आलोचक इसे दूसरे, तीसरे, चौथे या जितने भी यशायाह आप चाहें, में तोड़ देंगे। वे मूल रूप से कहेंगे, “नहीं, यह साइरस के समय से बहुत बाद में लिखा गया था।” वे दानियेल की पुस्तक के साथ वैसा ही व्यवहार करते हैं, दानियेल ने ये सभी भविष्यवाणियाँ की हैं: एंटिओकस एपिफेनीस... और उन्हें तारीख को नीचे खींचना होगा क्योंकि उनके पास भविष्यसूचक भविष्यवाणियाँ नहीं हो सकतीं क्योंकि कौन अकेला भविष्य बता सकता है? केवल ईश्वर ही भविष्य बता सकता है।

यहाँ यही होता है, मार्क ने यीशु के कथन को दर्ज किया है, और यीशु ने 32 ई. या 33 ई. में, अपनी मृत्यु से पहले, यह क्या कहा, वे उसे ऊपर ले गए और उसे वह महान मंदिर दिखाया जिसे हेरोदेस ने दूसरे मंदिर से फिर से बनाया था। और मूल रूप से वह कहता है, “हर पत्थर गिरा दिया जाएगा।” जब रोमन आए (70 ई.), तो उन्होंने जो किया वह था जगह को समतल करना और पत्थरों को नीचे फेंकना। अगर आप लोग दक्षिण दीवार की खुदाई में *जेरूसलम में खो गए थे*, तो उन्होंने वास्तव में खुदाई की है और इन विशाल पत्थरों को दिखाया है जो वहाँ दूसरे मंदिर के निर्माण का हिस्सा थे। रोमनों ने फिर उन पत्थरों को धकेल दिया, उन्हें 60, 70 फीट नीचे गिरा दिया। वे रोमन सड़क और इन विशाल पत्थरों से टकराए, और मैं शायद 5 और 6 फीट गुणा 5 और 6 की बात कर रहा हूँ (यह बहुत अधिक चट्टान है जब आप 5 फीट x 5 फीट x 5 फीट से शुरू करते हैं)। यह 60 फीट पर गिराने के लिए बहुत अधिक चट्टान है। इसने इन रोमन सड़कों में छेद कर दिए। ये रोमन सड़कें इन झंडों से इतनी अच्छी तरह बनाई गई थीं, और फिर ये चट्टानें उनसे टकराती हैं। आप रोमन सड़कों में इस छेद को देख सकते हैं, और यह बिल्कुल वही बात पूरी कर रहा था जो यीशु ने कहा था। यीशु ने कहा था कि मूल रूप से मंदिर को गिरा दिया जाएगा और सभी चट्टानें ढह जाएंगी और ठीक वैसा ही हुआ।

आलोचकों को यह पसंद नहीं है, इसलिए वे कहते हैं कि यीशु ने इसकी भविष्यवाणी नहीं

की थी। आपके पास जो है वह है *वैटिकनियम पोस्ट इवेंटु*, घटना के बाद की भविष्यवाणी। दूसरे शब्दों में, मार्क ने मंदिर के नष्ट होने के बाद इसे लिखा है, और फिर ये शब्द यीशु के मुंह में वापस डाल दिए गए। घटना के बाद भविष्यवाणी हुई और फिर इसे यीशु के मुंह में वापस डाल दिया गया। इस तरह आलोचक इस भविष्यवाणी से छुटकारा पाते हैं। अब समस्या यह है कि मार्क 65 से पहले लिखा गया था, यरूशलेम में मंदिर 70 ईस्वी तक नष्ट नहीं हुआ था, जो कि कम से कम 5 साल बाद है। कई लोग सोचते हैं कि मार्क 65 ईस्वी से बहुत पहले लिखा गया था, इसलिए, आलोचकों के पास यही समस्या है। इसलिए जब भी आप उस महान भविष्यवाणी पर आते हैं जो यीशु ने भविष्यवाणी की थी, तो वे हमेशा घटना के बाद की भविष्यवाणी पर जाएंगे जिसे बाद में पाठ में डाला गया था।

एफ. मार्क के रोमन श्रोतागण – भाषा [15:53-18:55]

सी: एफएच मार्क ऑडियंस को मिलाएं; 15:53-25:57

मार्क किसके लिए लिखा गया था? वह किसके लिए लिखा गया था? हमने यह सुझाव देने की कोशिश की कि शायद गैर-यहूदी पाठक भी हों। चर्च का इतिहास कहता है कि यह रोम में लिखा गया था। युसेबियस, प्रारंभिक चर्च के पिता - वास्तव में वह प्रारंभिक चर्च के पिता नहीं थे, बल्कि लगभग 325 ई. में प्रारंभिक चर्च के इतिहासकार थे। दूसरी शताब्दी के आरंभ में पापियास ने दर्ज किया कि मार्क संभवतः रोम से रोमनों को लिख रहे थे, और इसलिए आपको मैथ्यू के साथ जो मिला उससे बहुत अलग तस्वीर मिलती है। मैथ्यू यहूदी लोगों के लिए लिखा गया है, मार्क रोमनों के लिए लिखा गया है, यहाँ बहुत अलग दृष्टिकोण है।

रोम में उनकी उपस्थिति की पुष्टि की गई है। हमने पहले ही 1 पतरस 5:13 को देखा है जहाँ पतरस कहता है, "अरे, मैं बेबीलोन में हूँ। बेबीलोन के लोग और मेरा बेटा मार्क तुम्हें नमस्कार भेजते हैं।" हमने कहा कि बेबीलोन "रोम" के लिए एक कोड शब्द था। यह सर्वविदित है। इसलिए जॉन मार्क रोम में पीटर के साथ था, और यह वहाँ है इसलिए यह बहुत अच्छी तरह से रोमियों को लिखा जा सकता है। और कुलुस्सियों 4 में भी इसी तरह की बात है जहाँ यह रोम में जॉन मार्क का संदर्भ देता है।

इसलिए मार्क को संभवतः रोम में लिखा गया था; गैर-यहूदी प्रकार की चीजों के उदाहरण।

वह अनुवाद करता है, मार्क अरामी वाक्यांशों का अनुवाद करता है। इसलिए उदाहरण के लिए, और इनमें से कई आप लोग जानते हैं, अध्याय 5 श्लोक 41 में तलीथा कुम, यीशु इस छोटी लड़की को ठीक करने जा रहा है (उसे मृतकों में से जीवित करेगा), और मूल रूप से वह लड़की के पास आता है और कहता है, *तलीथा कुम*। जिसका अर्थ है, *तलीथा* का अर्थ है "छोटी लड़की," *कुम* का अर्थ है "उठो, उठो।" तो "छोटी लड़की, उठो।" और फिर क्या होता है, मैथ्यू अध्याय 5 श्लोक 41 में, यह कहता है, "उसने उसका हाथ पकड़ लिया और उससे कहा, ' *तालिथा कूम*।'" यह अरामी है, और एक यहूदी जानता होगा कि इसका क्या मतलब है, लेकिन मार्क कोष्ठक में कहता है, क्योंकि वह एक रोमन दर्शकों को लिख रहा है (वे अरामी नहीं जानते), वह कहता है, "[जिसका अर्थ है 'छोटी लड़की मैं तुमसे कहता हूँ उठो।']" तो वह इन वाक्यांशों की व्याख्या करता है।

आइए *बोअनेर्गेस* शब्द को देखें। जेम्स और जॉन, यहाँ ऐसा कहा गया है और मुझे अध्याय 3 पद 17 पढ़ने दें, "ज़ेबेदी के पुत्र याकूब और उसके भाई जॉन (दोनों ज़ेबेदी के पुत्र) को उसने यह नाम दिया, [या उपनाम बोअनेर्गेस] जिसका अर्थ है [और फिर वह इसका अनुवाद करता है] थंडर के पुत्र।" अब जब वह कहता है "गड़गड़ाहट के पुत्र," तो क्या इसका मतलब यह है कि ज़ेबेदी, उनके पिता, एक गड़गड़ाहट वाले आदमी थे? आप लोग थंडर के पुत्र हैं इसका मतलब है कि ज़ेबेदी एक गड़गड़ाहट वाला आदमी था, नहीं; जब वह थंडर के पुत्र कहता है तो इसका मतलब है कि उनमें वह गुण है। इसलिए जब आप किसी को किसी चीज़ का पुत्र कहते हैं, तो आप उनके पिता के बारे में बात नहीं कर रहे हैं, आप बता रहे हैं कि उनमें खुद वह गुण है

जी. मार्क के रोमन श्रोतागण—रीति-रिवाज, कानून और भूगोल [18:55-22:54]

वह यहूदी रीति-रिवाजों के बारे में बताते हैं। तो यहूदी रीति-रिवाजों के बारे में, मैं आपको मार्क 14:12 से कुछ उदाहरण देता हूँ। इसमें कहा गया है, "अखमीरी रोटी के पर्व के पहले दिन, जब फसह मेमने की बलि देने की प्रथा है।" तो अखमीरी रोटी के पर्व के पहले दिन फसह मेमने की बलि दी जाती है। अखमीरी रोटी का पर्व सात दिनों तक चलने वाला है, लेकिन अखमीरी रोटी के पर्व के पहले दिन फसह होता है जब फसह मेमने और वे चीज़ें जो आपने निर्गमन 12 से सीखी हैं। तो मार्क फिर कहता है, "अखमीरी रोटी के पर्व के पहले दिन जब फसह मेमने की बलि देने की

प्रथा है, तो यीशु के शिष्यों ने उससे पूछा, 'तुम चाहते हो कि हम फसह खाने के लिए तुम्हारे लिए तैयारी करने कहाँ जाएँ?' तो "जब फसह मेमने की बलि देने की प्रथा है," उस स्पष्टीकरण की आवश्यकता नहीं होगी यदि श्रोता यहूदी थे। यदि आप यहूदी हैं तो आपने अपने जीवन के प्रत्येक वर्ष फसह का पर्व मनाया होगा, आपको यह अच्छी तरह पता होगा कि फसह के मेमने का वध कब किया गया था।

अब यहाँ एक बड़ा उदाहरण है, अध्याय 7 श्लोक 2, हम पहले भी इस पर विचार कर चुके हैं, लेकिन यह काफी रोचक है। जब फरीसी कहते हैं, "उसके कुछ शिष्य अशुद्ध हाथों से भोजन कर रहे थे (अर्थात् बिना धुले)।" तब आपको कोष्ठक में एक स्पष्टीकरण मिलता है "[फरीसी और सभी यहूदी तब तक नहीं खाते जब तक कि वे बाजार से आने पर बुजुर्गों की परंपरा के अनुसार अपने हाथों को औपचारिक रूप से धो न लें।]" आपको एक यहूदी व्यक्ति को यह स्पष्टीकरण देने की आवश्यकता नहीं होगी। आपको यह बहुत ही आवश्यक होगा क्योंकि एक गैर-यहूदी, एक रोमन, यह नहीं समझ पाएगा कि यहूदी हर समय अपने हाथ क्यों धोते थे? इसलिए मार्क ने फिर से इसका एक लंबा स्पष्टीकरण दिया, जो एक तरह का गैर-यहूदी दृष्टिकोण दर्शाता है।

मार्क की पुस्तक में इसका कोई उल्लेख नहीं है, मैथ्यू की पुस्तक में लिखा है, "यीशु ने कहा, 'मैं व्यवस्था को नष्ट करने नहीं आया, बल्कि उसे पूरा करने आया हूँ।'" टोरा, व्यवस्था के बारे में बहुत चर्चा होती है, मार्क की पुस्तक में उस श्लोक का उल्लेख नहीं है। फिर से, रोमन श्रोताओं के साथ, जब आप कहते हैं कि "मैं व्यवस्था को नष्ट करने नहीं आया, बल्कि उसे पूरा करने आया हूँ," आप रोमन से "व्यवस्था" कहते हैं, तो वह शायद रोम में चल रही सीनेट में रोमन कानूनी कार्यवाही के बारे में सोच रहा होगा, न कि मूसा के बारे में। उन्हें मूसा के बारे में बहुत ज़्यादा जानकारी नहीं रही होगी।

तो बारह को भेजना, याद कीजिए कि हमने कैसे कहा कि बारह को सिर्फ यहूदियों के पास भेजा गया था और अन्यजातियों के पास नहीं। मत्ती 10 में बारह को भेजने का वह अंश मार्क की पुस्तक में नहीं मिलता। वह बारह को भेजने की पूरी बात को छोड़ देता है। यह समझ में आता है क्योंकि यहूदियों ने जब पहली बार बारह को भेजा था, तो यह सिर्फ इस्राएल के घराने के लिए था,

अन्यजातियों के लिए नहीं। इसलिए मार्क ने इसे छोड़ दिया।

मार्क भूगोल की व्याख्या करते हैं। रोमनों को फिलिस्तीन का भूगोल नहीं पता होगा। वे गूगल मैप्स पर जाकर वहां जाकर यह नहीं देख पाएंगे कि यह कैसा था। तो क्या हुआ, अध्याय 13 की आयत 3 में कहा गया है, "जब यीशु जैतून के पहाड़ पर मंदिर के सामने बैठा था।" तो आपको यहाँ जैतून का पहाड़ मिला है, जो लगभग 2,700 फीट ऊँचा है, मंदिर का पहाड़ (शायद लगभग 2,300 फीट), और इसलिए आपको जो मिला है वह यह है कि यह एक घाटी में नीचे चला जाता है, किद्रोन या यहोशापात, दूसरी तरफ से ऊपर आता है। इसलिए यदि आप जैतून के पहाड़ पर हैं तो आप मंदिर के सामने हैं। तो, आज डोम ऑफ द रॉक, और यदि आप में से कुछ लोग गेट लॉस्ट इन जेरूसलम कार्यक्रम में गए हैं तो आपने देखा होगा कि जैतून का पहाड़ इस मंदिर, मंदिर क्षेत्र को देखता है। इसलिए मार्क कहते हैं कि वे यह नहीं जानते। इसलिए वे कहते हैं कि यीशु जैतून के पहाड़ पर है। वे जैतून के पहाड़ और हरमोन पहाड़ के बीच का अंतर नहीं जानते। मार्क कहते हैं, "नहीं नहीं, जैतून का पहाड़ मंदिर के सामने है।" तो फिर, आपको यह बात किसी यहूदी व्यक्ति को समझाने की ज़रूरत नहीं होगी जो यरूशलेम में दावत के लिए गया हो और जैतून के पहाड़ को जानता हो। आपको यह बात किसी रोमन व्यक्ति को समझानी होगी।

एच. लैटिन श्रोतागण—भाषा और रोमन का उल्लेख [22:54-25:57]

तो लैटिन श्रोताओं के लिए, यहाँ भाषाओं से कुछ है (और फिर से यह कोई बड़ी बात नहीं है), लेकिन यह दिलचस्प है। वह कुछ ग्रीक वाक्यांश लेता है और आपको उनके लिए लैटिन देता है। फिर से, यदि आप यहूदी श्रोताओं को लिख रहे थे तो आप ऐसा नहीं करेंगे, लेकिन यदि आप लैटिन या रोमन श्रोताओं को लिख रहे थे तो आप रोमन संदर्भ को आगे बढ़ाएँगे। तो *ऑलेस*, जिसका अर्थ है "महल", *ऑलेस* ग्रीक है, इसका अर्थ है "महल", लेकिन फिर मार्क कहते हैं, "यह *प्रेटोरियम* है।" और जब आप "प्रेटोरियम" शब्द देखते हैं, और मैंने यहाँ इसकी जाँच की, मेरे कुछ छात्रों के पास लैटिन था, जब आप देखते हैं कि -ium अंत में यह निश्चित रूप से एक लैटिन शब्द है, *प्रेटोरियम*, जिसका मूल रूप से महल का अर्थ है। मार्क 15:16 से, यह दिखाता है कि मार्क ने ग्रीक से स्विच किया है, और वह इस तरह की लैटिन वाक्यांशविज्ञान को दे रहा है, *प्रेटोरियम*,

ताकि वे समझ सकें कि वह एक निश्चित प्रकार के महल के बारे में बात कर रहा है। तो यह लैटिन या रोमन प्रभाव को दर्शाता है। मैं लैटिन का बहुत बड़ा जानकार नहीं हूँ; मैंने कुछ लैटिन पढ़ी है, लेकिन मैं हमेशा कहता हूँ कि लैटिन ग्रीक भाषा के आधे हिस्से से नकल की गई लगती है। इसलिए अगर आपने लैटिन पढ़ी है तो ग्रीक सीखना बहुत स्वाभाविक है क्योंकि वे कई मायनों में एक जैसे हैं।

अब यहाँ एक और है, और यह वास्तव में बहुत अजीब है। मुझे लगता है कि यह वास्तव में बहुत मजेदार है इसलिए मुझे बस यह करने दें। क्या आपको याद है कि शमौन कुरेनी था जिसे यीशु को क्रूस उठाना था और उसे इतनी बुरी तरह पीटा गया था कि वह मुश्किल से क्रूस उठा पा रहा था। उसे अपना क्रूस गोलगोथा तक ले जाना है। यीशु क्रूस नहीं उठा सकते क्योंकि वह कमजोर हो गए हैं। तो, क्या हुआ, उन्होंने इस शमौन कुरेनी को पकड़ लिया, वह कुरेनी से है। अब कुरेनी कहाँ है? मैं इसे अपना हाथ नहीं बना सकता लेकिन मान लीजिए कि मेरा हाथ इटली का जूता है। यह इटली का जूता है, कुरेनी भूमध्य सागर के पार लीबिया में है। तो यह पता चला कि रोमन लोगों का उल्लेख किया गया है। रुफ़स और अलेक्जेंडर, यह पता चला कि ये शमौन कुरेनी के बच्चे हैं। शमौन कुरेनी, जिसने यीशु का क्रूस उठाया, उसके बच्चे रुफ़स और अलेक्जेंडर ईसाई बन गए और मार्क ने अध्याय 15 पद 21 में उनका उल्लेख किया, इसलिए पॉल ने रोमियों की पुस्तक में उनका उल्लेख किया। जाहिर है कि रोमियों की किताब रोमियों को लिखी गई है (यह बात कुछ हद तक समझ में आती है), इसलिए रोमियों को रोमियों को लिखा गया है और अध्याय 16 की आयत 30 में पॉल इन सभी लोगों और उनकी माताओं को बधाई दे रहा है। पॉल रोमियों की किताब के अंत में यह बड़ा अभिवादन करता है, और जिन दो लोगों को वह बधाई देता है, वे हैं रुफ़स और अलेक्जेंडर। ऐसा लगता है कि मार्क भी उन्हें बधाई देता है। पॉल द्वारा रोम को लिखे जाने से पता चलता है कि रुफ़स और अलेक्जेंडर रोम में हैं, इसलिए यह रोमन संदर्भ में फिट बैठता है।

I. वैचारिक रूपरेखा और लेखन के लिए मार्क का उद्देश्य [25:57-28:09]

डी: कंबाइन आईके; 25:57-35:15; उद्देश्य, सुसमाचार, ओटी उद्धरण

ऐसा लगता है कि मार्क की पुस्तक में रोमन वैचारिक ढाँचा है। अब यह थोड़ा और अमूर्त है,

लेकिन मूल रूप से शक्ति की धारणा, दूसरे शब्दों में, मार्क की पुस्तक में शक्ति बहुत बड़ी है। यीशु ये सभी काम शक्ति के साथ अधिकारपूर्वक करते हैं। रोम शक्ति में है। तो आप गेरगासा में गेरगासीन राक्षसी को सूअरों में डाले गए राक्षसों की सेना और पहाड़ी से नीचे भागते हुए देखेंगे। मार्क ने इसे बड़े पैमाने पर विकसित किया है। तो आपको राक्षस मिल गए हैं। भीड़; यीशु के पास बहुत भीड़ है; यीशु अपने कुछ चमत्कार नहीं कर सकते। यीशु नाव में चढ़ जाते हैं क्योंकि वहाँ बहुत भीड़ है। भीड़: यह रोमन दृश्य के साथ फिट बैठता है; भोज, यह रोम के साथ भी फिट बैठता है। इसलिए, यह एक तरह से अमूर्त है, अधिक अमूर्त, लेकिन शक्ति, राक्षस, भीड़ और भोज। ये ऐसी चीजें हैं जो रोमन परिदृश्य के साथ फिट बैठती हैं।

तो, अब तक मैं जो सुझाव देने की कोशिश कर रहा हूँ, चूँकि हम उन श्रोताओं को समझने की कोशिश कर रहे हैं जिनके लिए मार्क लिख रहे हैं, हम यह भी समझने की कोशिश कर रहे हैं कि मार्क कौन थे। आपको पुस्तक को समझने के लिए लेखक के बारे में कुछ जानने की ज़रूरत है, और मुझे लगता है कि आपको यह भी समझने की ज़रूरत है कि लेखक और श्रोताओं के बीच क्या संबंध है। किस संकट या किसी और चीज़ ने इस लेखक को इस श्रोता के लिए यह सब लिखने के लिए प्रेरित किया। तो इन दोनों के बीच क्या गतिशीलता थी और यह पता चलता है कि लेखक और श्रोता दोनों ही महत्वपूर्ण हैं। अब, यह संभव है कि प्रेरितों का मरना शुरू हो गया था और रोम के लोग मार्क के पास आए और कहा “मार्क, क्या आप यह सब लिखेंगे? आप पीटर को किसी और से बेहतर जानते हैं। आप प्रेरितों को जानते हैं; जब उन्होंने प्रभु का भोज किया (इस तरह की सभी बातें)। मार्क कृपया हमारे लिए एक सुसमाचार लिखें।” तो ऐसा हो सकता है कि जब शिष्य बड़े हो रहे थे और मर रहे थे, तो रोमियों को यह कहने के लिए एक सुसमाचार लिखने का आह्वान किया गया था, “अरे! हम यीशु के बारे में जानना चाहते हैं। हमें बताएं कि आप यीशु के बारे में क्या जानते हैं।” तब मरकुस पतरस की कहानी का अर्थ बताने में सक्षम हुआ।

जे. मसीह का चित्रण—पहला सुसमाचार [28:09-31:19]

अब आइए मार्क की पुस्तक में मसीह के चित्रण को देखें। मार्क मसीह को कैसे चित्रित करता है? मैं इस पहले बिंदु पर बहुत जोर नहीं देना चाहता। बस इतना ही कहना चाहता हूँ, मुझे

लगता है कि मार्क एक सारांश है। पतरस सुसमाचार का सारांश देता है। प्रेरितों के काम अध्याय 10 पद 34-43 में, पतरस एक छोटा सा उपदेश देता है, 10 पद से थोड़ा कम (लगभग 9 पद या उससे ज्यादा), पतरस प्रेरितों के काम अध्याय 10 पद 34 और उसके बाद यीशु मसीह के सुसमाचार का सारांश देता है। यह पता चलता है कि मार्क की पुस्तक, यदि आप पीटर द्वारा दिए गए उस छोटे से सारांश उपदेश और मार्क की पुस्तक के बीच तुलना करते हैं तो वे एक दूसरे से बिल्कुल मेल खाते हैं। इसलिए यह पीटर के उस उपदेश और प्रेरितों के काम की पुस्तक के बीच एक दिलचस्प संबंध है क्योंकि मार्क पीटर के सुसमाचार को लिख रहा है।

तो, मार्क अपनी पुस्तक को "एक सुसमाचार" कहने वाले पहले व्यक्ति हैं, और वास्तव में मुझे नहीं लगता कि यह शैली का शब्द है, कि वे कह रहे हैं, "मैं एक सुसमाचार लिखने जा रहा हूँ," जैसे कि वहाँ था: मैथ्यू एक सुसमाचार था, मार्क एक सुसमाचार था, ल्यूक एक सुसमाचार था, और जॉन एक सुसमाचार था। एक साहित्यिक शैली के रूप में सुसमाचार, मुझे नहीं लगता कि वह यही संदर्भित कर रहा था। वह इसे पहला सुसमाचार कह रहा है और वह इसे एक सुसमाचार के रूप में पहचानता है। वह इसे *यू एगेलियन कहता है* जो कि सुसमाचार है, ग्रीक में "सुसमाचार" के लिए शब्द। यूका अर्थ है "अच्छा।" तो अगर आप एक व्यंजना कहते हैं, तो व्यंजना क्या है? आप व्यंजना कहते हैं अगर मान लीजिए कोई मर गया और आप कहते हैं कि वह व्यक्ति मर गया, तो यह व्यंजना नहीं है। मरना एक बहुत ही नकारात्मक बात है, तो आप क्या कहेंगे? "वे मर गए।" दूसरे शब्दों में, वे मर गए, या वे अपने विश्राम के लिए चले गए या ऐसा ही कुछ। व्यंजना तब होती है जब आप किसी चीज़ के बारे में कुछ अच्छा कहते हैं। स्तुति, क्या आपने कभी किसी को स्तुति देते हुए सुना है? मेरे पिताजी ने, उनके निधन के बाद, कहा कि वे नहीं चाहते कि कोई उनके बारे में स्तुति करे। स्तुति, यूका अर्थ है "अच्छा", *लॉजी लॉगोस* की तरह है, जिसका अर्थ है "एक अच्छा शब्द।" इसलिए आमतौर पर जब कोई व्यक्ति मर जाता है तो वे उस व्यक्ति के बारे में एक अच्छा लॉगोस, एक अच्छा स्तुति कहते हैं। और इसलिए यहाँ आपके पास *यू एगेलियन है*, आप यहाँ एंजेल की तरह देख सकते हैं, है ना? एंजेल? वास्तव में पहला जी ग्रीक में एन बन जाता है इसलिए यह *यू एगेलियन है*, *यू एगेलियन का अर्थ है "एक अच्छा संदेश।" एक देवदूत क्या है? एक देवदूत बस एक संदेशवाहक है। एगेलोस* शब्द का अर्थ है "एक संदेशवाहक।" इसका मतलब यह नहीं है कि

उनके पास पंख थे, इसका मतलब बस एक संदेशवाहक है। इसलिए सुसमाचार एक अच्छा संदेश है।

सुसमाचार एक घोषणा है। मार्क जो लिख रहा है वह अच्छी खबर या अच्छे संदेश की घोषणा है। इसलिए मार्क, वास्तव में, अपनी पुस्तक में अपनी पहली आयत में इसे इस तरह से पहचानता है।

के. मार्क यशायाह [31:19-35:15] का हवाला देते हैं

अब इस पहली आयत में कुछ अन्य बातें भी शामिल हैं जिन्हें मैं मार्क के सुसमाचार में देखना चाहता हूँ। मुझे बस रुककर मार्क की पुस्तक की पहली आयत पढ़नी है। आप देखेंगे कि मैथ्यू में भी हमने पहली आयत को काफी हद तक देखा है। मुझे लगता है कि वह पहली आयत में जो कर रहा है उसे उसने स्थापित कर दिया है।

और इसलिए मार्क अध्याय 1 पद 1 में यह कहा गया है, "सुसमाचार की शुरुआत (या यू एंगेलियन, अच्छी खबर) ईश्वर के पुत्र यीशु मसीह के बारे में अच्छी खबर की शुरुआत। यह भविष्यवक्ता यशायाह में लिखा है, 'मैं तुम्हारे आगे अपना दूत भेजूंगा जो तुम्हारा मार्ग तैयार करेगा। जंगल में पुकारने वाले की आवाज प्रभु के लिए मार्ग तैयार करती है। उसके लिए सीधे रास्ते बनाओ।'" और इसलिए जॉन रेगिस्तानी क्षेत्र में बपतिस्मा देने आया। अब इस पहले पद से यहाँ कुछ सवाल उठते हैं। आपको जो मिलता है वह कुछ इस तरह है। क्या जॉन मार्क शास्त्र को गलत तरीके से उद्धृत कर रहा है? मैं इसे फिर से पढ़ूंगा और बताऊंगा कि जॉन मार्क, और मैं कहने जा रहा हूँ कि यहाँ कहाँ गलती करता है, वह कहता है, "यह यशायाह भविष्यवक्ता में लिखा है, 'मैं तुम्हारे आगे अपना दूत भेजूंगा जो तुम्हारा मार्ग तैयार करेगा।'" क्या यह यशायाह से है? वह कहते हैं, "यशायाह नबी में लिखा है, 'मैं अपने दूत को तुम्हारे आगे भेजूँगा।'" यह यशायाह से नहीं है, यह मलाकी 3:1 से है। यह नहीं है - वह कहते हैं कि नबी यशायाह कहते हैं, "मैं अपने दूत को तुम्हारे आगे भेजूँगा।" यह मलाकी से है, यशायाह से नहीं। मैं आपको मलाकी 3:1 पढ़कर सुनाता हूँ। "देखो, मैं अपने दूत को भेजूँगा जो मेरे आगे मार्ग तैयार करेगा।" यही वह उद्धृत कर रहा है। "तब अचानक प्रभु जिसे तुम खोज रहे हो, वह अपने मंदिर में आएगा। वाचा का दूत जिसे तुम चाहते हो, आएगा,"

सर्वशक्तिमान प्रभु कहते हैं।" इसलिए कुछ लोग कहते हैं कि मार्क ने पुराने नियम से गलत उद्धरण दिया। उसने वास्तव में कहा कि यह यशायाह से था लेकिन यह वास्तव में मलाकी से था।

क्या आप सच जानते हैं? यह सिर्फ मलाकी से नहीं है। यह "देखो मैं इस दूत को अपने आगे चलने के लिए भेजता हूँ," यह वास्तव में निर्गमन 23 से प्रतिध्वनित होता है, मेरा मानना है कि यह श्लोक 20 है। तो निर्गमन 23:20 में एक प्रतिध्वनि है। यह तब मलाकी अध्याय 3 से विशेष रूप से प्रतिध्वनित होता है और फिर अगला श्लोक क्या कहता है? अगला श्लोक यह कहता है, "मैं अपने दूत को तुम्हारे आगे भेजूँगा जो तुम्हारा मार्ग तैयार करेगा," और वह मलाकी है। "रेगिस्तान में पुकारने वाले की आवाज़," यह यशायाह 40:3 है। तो मार्क यहाँ क्या कर रहा है, वह एक मिश्रित उद्धरण बना रहा है; वह कह रहा है कि यशायाह ने यह इसलिए कहा क्योंकि यशायाह बड़ा भविष्यवक्ता है। मलाकी कौन है? आप जानते हैं कि ज्यादातर लोग शायद नहीं जानते होंगे। आप कहते हैं कि वे रोम में मलाकी को नहीं जानते होंगे क्योंकि - मैंने अक्सर कहा है कि मलाकी इतालवी भविष्यवक्ताओं में से अंतिम है। उसका नाम मलाकी है, लेकिन मैं उसे मलाकी कहता हूँ, जो इतालवी भविष्यवक्ताओं में से अंतिम है, लेकिन इतालवी लोग उसे जानते होंगे। नहीं, नहीं, यह एक मज़ाक है। लेकिन यहाँ आपके पास यह मिश्रित उद्धरण है जहाँ वह निर्गमन से विचार दोहरा रहा है। वह विशेष रूप से मलाकी से उद्धरण दे रहा है और वह यशायाह से इस उद्धरण को मिला रहा है जिसका संदर्भ जॉन बैपटिस्ट से है जैसा कि हम अगले श्लोक में देखेंगे। फिर वह कहता है "जैसा यशायाह ने कहा।" तो, दूसरे शब्दों में, वह सूची नहीं बनाता है और वह कहता है 'वास्तव में मैं निर्गमन, मलाकी और यशायाह से एक मिश्रित उद्धरण बना रहा हूँ,' वह केवल यशायाह को उद्धृत करता है क्योंकि वह वह बड़ा स्थान है जिसका वह उल्लेख कर रहा है। वैसे, वे हमारे जैसे फुटनोट नहीं करते हैं, जहाँ हर छोटी-छोटी जानकारी को फुटनोट में शामिल करना होता है। वह केवल उस प्रमुख व्यक्ति को उद्धृत कर रहा है जिसका वह उद्धरण दे रहा है।

एल. मार्क मसीह के ईश्वरत्व की पुष्टि करता है [35:15-40:13]

ई: एल.एन. को संयोजित करें; 35:15-46:13; मार्क में मसीह का ईश्वरत्व और मानवता
लेकिन अब मेरे लिए दिलचस्प बात यह है कि संदेशवाहक जो उस बिंदु पर पहले से ही

रास्ता तैयार करता है, उद्धरण में एक बदलाव लगता है। वह जो उद्धरण देता है वह वास्तव में मलाकी को उद्धृत नहीं करता है और मैं देखना चाहता हूँ - क्या आप व्यक्तिगत सर्वनाम के बारे में जानते हैं? व्यक्तिगत सर्वनाम महत्वपूर्ण हैं। हमारे पास एक प्रथम व्यक्ति सर्वनाम है, जो क्या है? "मैं।" हमारे पास एक दूसरा सर्वनाम है जो "आप" है, और हमारे पास एक तीसरा व्यक्तिगत सर्वनाम है जो "वह, वह" या "यह" है। तो आपके पास मैं (पहला व्यक्ति), आप (दूसरा व्यक्ति), वह/वह/यह (तीसरा व्यक्ति) है। अब देखें कि यहाँ क्या होता है। वह कहता है, "मैं अपने संदेशवाहक को तुम्हारे आगे भेजता हूँ," मार्क में यह "तुम" कहता है, लेकिन यदि आप मलाकी पर वापस जाते हैं, तो मलाकी वास्तव में क्या कहता है? यहाँ मलाकी वास्तव में क्या कहता है: "मैं अपना संदेशवाहक भेजूँगा," वह मैं कौन है जो बोल रहा है? खैर, यह सर्वशक्तिमान प्रभु, सर्वशक्तिमान यहोवा कहता है। सर्वशक्तिमान प्रभु बोल रहे हैं और वे कहते हैं, "मैं अपना दूत भेजूँगा जो मेरे आगे मार्ग तैयार करेगा," कौन? "मेरे आगे।" मैं इसे फिर से पढ़ता हूँ, "मैं अपना दूत भेजूँगा जो मेरे आगे मार्ग तैयार करेगा।" मार्क कहते हैं, "दूत आपके आगे मार्ग तैयार करेगा," यीशु का संदर्भ देते हुए। फिर इससे क्या संबंध बनता है? "सर्वशक्तिमान प्रभु कहते हैं, मैं अपना दूत भेजूँगा जो मेरे आगे मार्ग तैयार करेगा," मार्क कहते हैं कि प्रभु ने आपके आगे मार्ग तैयार करने के लिए अपना दूत भेजा यीशु। यह कहता है कि यीशु सर्वशक्तिमान प्रभु हैं। तो यहाँ यह दूसरी आयत, फिर, ईश्वर के ईश्वरत्व की पुष्टि है, कि यह है। मलाकी में यह ईश्वर बोल रहा है कि दूत ईश्वर के आगे जाएगा। वह दूत कौन निकलता है जिसके आगे वह जाता है? यह यीशु है, आप, और इसलिए सर्वनामों में बदलाव अद्भुत है। यह पुराने नियम में ईश्वर, यहोवा, पुराने नियम में यीशु पर लागू होता है, यहाँ मार्क की पुस्तक में ठीक सामने।

यह अजीब बात है, जब लोग मसीह के ईश्वरत्व का अध्ययन करना चाहते हैं तो वे हमेशा जॉन की पुस्तक का अध्ययन करते हैं। यदि आपके पास यहोवा के साक्षी लोग आते हैं और यह कहने की कोशिश करते हैं कि यीशु ईश्वर नहीं है, यहोवा है, वह एक ईश्वर है; लोग हमेशा जॉन की पुस्तक का अध्ययन करते हैं। लेकिन यहाँ मलाकी के इस उद्धरण में सर्वनामों के इस तरह से बदलने से यह पता चलता है; आप देख सकते हैं कि मार्क यीशु मसीह को सर्वशक्तिमान ईश्वर, सर्वशक्तिमान प्रभु के साथ समान कर रहा है। तो यह एक अद्भुत उद्धरण है जिसे मार्क ने वहाँ

एक साथ रखा है। यह वास्तव में शानदार है।

तो क्या होता है? तो वहाँ दूत मेरे सामने रास्ता तैयार करता है, और यह यहोवा/जेहोवा को संदर्भित करता है। इस तरह से वे इसे संक्षिप्त करते हैं; वैसे YHWH आप देख सकते हैं कि यहाँ कोई स्वर नहीं है। कुछ यहूदी लोग इसे इस तरह से लिखेंगे, साथ ही कुछ ईसाई भी, क्योंकि आप इसका उच्चारण नहीं कर सकते क्योंकि इसमें कोई स्वर नहीं है। ऐसा करने का कारण यह है कि वे ईश्वर के नाम का उच्चारण अनुचित संदर्भ में नहीं करना चाहते हैं ताकि यह ईशनिंदा हो। इसलिए ईश्वर के नाम की निंदा से बचने के लिए वे स्वरों को हटा देते हैं ताकि आप इसे बिल्कुल न बोलें और वे वास्तव में *एडोनाई कह दें, जिसका अर्थ है भगवान। यहोवा कहने के बजाय, वे एडोनाई कहेंगे जिसका अर्थ है भगवान, या वे हाशेम कहेंगे*, "नाम" या ऐसा ही कुछ घुमावदार शब्द।

तो संदेशवाहक मेरे, यहोवा के सामने मार्ग तैयार करता है, यह यीशु निकलता है और मार्क इसे उठाता है और उद्धरण को बदल देता है। अब यहाँ, मार्क अध्याय 1 पद 3 में यह कहा गया है, "जंगल में पुकारने वाली आवाज़, प्रभु का मार्ग तैयार करो," "यहोवा का मार्ग तैयार करो," "यहोवा का मार्ग तैयार करो।" यह यशायाह 40:3 से आ रहा है। मार्क कहते हैं कि यह यशायाह से आता है और इसलिए यह एक तरह का संयुक्त उद्धरण है। "प्रभु के सामने मार्ग तैयार करो।" वह प्रभु कौन है जिसका मार्ग तैयार किया जा रहा है? यह जॉन बैपटिस्ट है जो यीशु के सामने मार्ग तैयार कर रहा है। तो, फिर से, यीशु को यहाँ यहोवा के साथ जोड़ा जा रहा है, और "जंगल में पुकारने वाले की आवाज़" जॉन बैपटिस्ट होगी जिसका परिचय मार्क 1:4 में अगले पद में दिया गया है। तो मैं बस यही कहना चाह रहा हूँ कि यह उद्धरण, मलाकी और यशायाह के ये दोनों उद्धरण, दोनों यीशु को यहोवा के रूप में इंगित करते हैं। कि परमेश्वर "मेरे आगे मार्ग तैयार करने के लिए अपना दूत भेजेगा," यह पता चलता है कि वह "मैं" यीशु है, लेकिन यह यहोवा भी है, और रेगिस्तान में पुकारने वाले की आवाज़, प्रभु का मार्ग तैयार करती है, यीशु निकलती है और जॉन बैपटिस्ट इसे पूरा करने जा रहा है। तो ये कुछ बहुत बढ़िया चीजें हैं जो वहाँ हो रही हैं।

M. सुसमाचार क्या है? [40:13- 43:29]

अब सुसमाचार, हमने इसके बारे में अच्छी खबर के रूप में बात की, इसे "अच्छी खबर"

क्यों कहा जाता है? मैं बस यह सुझाव देना चाहता हूँ, जब आप "अच्छी खबर, रथों का आना, अच्छी खबर" के बारे में सोचते हैं तो एक लाख चीजें होती हैं। सुसमाचार की अच्छी खबर क्या है? मूल रूप से जीवन और मृत्यु के मुद्दे, कि मृत्यु शासन नहीं करती है, यीशु ने मृत्यु की शक्ति को नष्ट कर दिया। मृत्यु अंत में जीत नहीं पाती है। मृत्यु अंत में जीत नहीं पाती है, लेकिन एक पुनरुत्थान है, एक *एनास्टेसिस* है, एक पुनरुत्थान है। इसलिए जीवन मृत्यु, पाप और क्षमा पर जीतता है - या पापों ने हमें मृत्यु की निंदा की है। "सभी ने पाप किया है और परमेश्वर की महिमा से रहित हैं।" "पाप की मजदूरी मृत्यु है।" और जो होता है वह यीशु मसीह के माध्यम से क्षमा किया जाता है, अच्छी खबर यह है कि हम अपने पाप का बोझ नहीं उठाते हैं, कि यीशु मसीह हमारे पाप के लिए मर गए और हम "देखो, परमेश्वर का मेम्रा जो दुनिया के पाप को दूर ले जाता है।" और इसलिए यह एक अविश्वसनीय बात है, पाप जो हम पर बोझ है। पाप की मजदूरी जो हमें मृत्यु की सजा देती है, यीशु मसीह परमेश्वर का मेम्रा संसार के पाप को दूर करता है। खालीपन और प्रेम (यीशु का महान संदेश); आप जानते हैं, एक दूसरे से वैसा ही प्रेम करें जैसा मैंने आपसे किया है, बनाम खालीपन और यह एहसास कि हम ब्रह्मांड में कितने अकेले हैं, हम अपने जीवन के विभिन्न पहलुओं में कितने अकेले हैं। यीशु प्रेम और प्रेम बंधन की संभावना को खोलता है, लोगों को एक साथ जोड़ता है। जीवन की सांस, आप जानते हैं, जीवन की सांस क्या है और यह बस गुजर जाती है।

मैं हमेशा लोगों को बताता हूँ कि मैं गॉर्डन कॉलेज में काम करता हूँ। अगर मैं एक या दो साल के भीतर मर जाता हूँ और किसी दूसरी जगह चला जाता हूँ तो कोई भी आपको याद नहीं करता। ये वो चीज़ें हैं जिन्हें आप अपने जीवन की महान उपलब्धियाँ मानते हैं, आपको एहसास होता है कि वे कितनी कमज़ोर हैं। कोई भी वास्तव में नहीं जानता या परवाह नहीं करता। महत्व, महत्व क्या है? हमारा महत्व प्रभु में है, सर्वशक्तिमान ईश्वर की सेवा करने की संभावना, चाहे जीवन की साँसें कैसी भी हों। यह ईश्वर और मानवजाति के बीच मेल-मिलाप है; मेल-मिलाप जहाँ ईश्वर हमारे पाप के कारण अलग-थलग पड़ गया था, अब मेल-मिलाप है। मनुष्य ईडन गार्डन में वापस लौटता है। मूल रूप से मनुष्य को गार्डन से बाहर भेज दिया गया था, ईश्वर से अलग कर दिया गया था और अब अचानक पूरी बाइबल इस खुशखबरी के बारे में बात कर रही है। कि, हाँ, मनुष्य को ईश्वर की उपस्थिति से बाहर निकाल दिया गया था, लेकिन पूरी बाइबल कह रही है, ईश्वर अपने लोगों के पास

वापस आने का प्रयास कर रहा है ताकि ईश्वर इममानुएल बन सके, ताकि वह अपने लोगों के साथ हमेशा के लिए रह सके। तो यह मेलमिलाप पूरी बाइबल की कहानी है और यही कारण है कि बाइबल प्रकाशितवाक्य अध्याय 21 और 22 में हमारे परमेश्वर के मंदिर, नए यरूशलेम के नीचे आने के साथ समाप्त होती है, और आपके पास हमेशा के लिए परमेश्वर और मनुष्य का यह पुनर्मिलन है। स्वर्ग का राज्य निकट है, और इसलिए इस तरह की अवधारणाएँ अच्छी खबर हैं। स्वर्ग का राज्य निकट है, और वास्तव में यह है, मेरा मानना है। तो अच्छी खबर है, और एक लाख अन्य चीजें हैं (ये सिर्फ कुछ अमूर्त चीजें हैं जिनके बारे में हम सोचना चाहते हैं)।

N. मार्क में यीशु की मानवता और ईश्वरत्व [43:29-46:13]

अब मार्क की पुस्तक दिलचस्प है। मैथ्यू मसीह को राजा के रूप में चित्रित करेगा, जॉन मसीह को परमेश्वर के पुत्र के रूप में बहुत कुछ करेगा। मार्क ने मसीह को बहुत ही मानवीय तरीके से चित्रित किया है। मार्क 2:16, आप यीशु को खाते हुए देखते हैं, आप उन्हें अध्याय 15 पद 36 में पीते हुए देखते हैं। आप यीशु को भूखा देखते हैं, क्या यीशु कभी भूखे होते हैं? अध्याय 11 पद 12 में आप यीशु को भूखा देखते हैं। फिर यीशु लोगों को छूता है, अध्याय 1 पद 41, वह लोगों को छूता है। फिर अध्याय 3 पद 5 में (मैंने इसे यहाँ सूचीबद्ध भी किया है), यीशु क्रोधित हो जाता है। हमने पहले कहा था कि विकृत हाथ वाला एक आदमी था, और फरीसी उसे यीशु के पास यह देखने के लिए लाए थे कि क्या वह सब्त के दिन उसे ठीक कर देगा, और यीशु उनके मामले में उलझ जाता है और कहता है, "अरे आदमी" और वह उन्हें गुस्से में देखता है, "और यीशु उन्हें गुस्से में देखता है।" इसलिए यीशु फरीसियों पर क्रोधित हो जाता है क्योंकि वे इस विकृत हाथ वाले आदमी के लिए सब्त का सम्मान करना चाहते हैं। इसलिए यीशु विकृत हाथ वाले व्यक्ति को ठीक करते हैं और कहते हैं, "सब्त के दिन भलाई करना अच्छा है।" इसलिए यीशु उन्हें सुधारते हैं। तो यह दिलचस्प है, रेमंड ब्राउन, एक महान रोमन कैथोलिक धर्मशास्त्री जिन्होंने जॉन की पुस्तक और सुसमाचारों पर बहुत कुछ लिखा है, ब्राउन ने कहा कि अगर हमारे पास केवल पॉल होता तो हमारे पास मसीह का धर्मशास्त्र होता; मार्क मसीह पर एक चेहरा डालता है। मैं इससे सहमत हूँ, कि मार्क ने मसीह को बहुत ही मानवीय तरीके से चित्रित किया है। तो आपको मार्क में यीशु का मानवीय पक्ष देखने को

मिलता है।

अब मार्क की पुस्तक में मसीह ईश्वरीय है, हाँ, हमने कुछ बातें कही हैं। जॉन ने यीशु के सामने मार्ग तैयार करने के लिए बपतिस्मा देना शुरू किया, उसने कहा, "प्रभु के मार्ग के सामने।" मार्क अध्याय 1 श्लोक 11 में कहा गया है, "तुम मेरे पुत्र हो।" और वास्तव में यह भजन अध्याय 2 श्लोक 7 से उद्धृत है, परमेश्वर का पुत्र मसीहा है। तो मार्क के पास भजन अध्याय 2 से यहाँ एक और पुराने नियम का उद्धरण है, यह एक और है; वास्तव में आप इसमें जा सकते हैं और भजन अध्याय 2 पर एक पूरी बात विकसित कर सकते हैं। यहाँ इस "पुत्र" का उल्लेख किससे किया जा रहा है, "तुम मेरे पुत्र हो, आज मैंने तुम्हें जन्म दिया है और तुम्हारा पिता बन गया हूँ"? इसके अलावा जब वह जॉन बैपटिस्ट से आता है, तो कथन, "तुमसे मैं बहुत प्रसन्न हूँ," और पीड़ित सेवक की यह धारणा जिस पर परमेश्वर अपनी आत्मा डालेगा और वह पृथ्वी पर उद्धार और न्याय लाएगा। तो इस तरह की बात, इसलिए यीशु को वहाँ परमेश्वर का पुत्र माना जाता है।

O. यीशु की मनुष्य के पुत्र के रूप में स्वयं की पहचान [46:13-50:30]

एफ: संयुक्त OR; 46:13-62:54; सन ऑफ मैन

अब मैं यहाँ विषय बदलना चाहता हूँ, और दो बड़ी बातें हैं जिन्हें मैं मार्क की पुस्तक पर कवर करना चाहता हूँ, और ये दो बड़ी बातें हैं - हमने बहुत सारी व्यक्तिगत पृष्ठभूमि (रोमन श्रोता) के बारे में बात की है। मार्क की पुस्तक में दो बातें बहुत बार सामने आती हैं: एक, यीशु का आत्म-पदनाम। यीशु खुद को कैसे पहचानते हैं? यीशु खुद को क्या कहते हैं? यीशु खुद को कई बार बुलाते हैं, जहाँ तक उनकी खुद की पहचान का सवाल है, यीशु खुद को मनुष्य का पुत्र कहते हैं। तो मैं बस इस पर नज़र डालना चाहता हूँ और फिर चर्चा करना चाहता हूँ, यीशु का इस शब्द "मनुष्य का पुत्र" से क्या मतलब है? मनुष्य का पुत्र शब्द का क्या मतलब है? तो सबसे पहले हम बस इस बारे में बात करना चाहते हैं कि "पुत्र" शब्द का क्या मतलब है? किसी चीज़ या दूसरे का पुत्र का क्या मतलब है, मनुष्य का पुत्र का क्या मतलब है? कभी-कभी इसका मतलब होता है, अगर यीशु यूसुफ का पुत्र है तो इसका क्या मतलब है? अगर सुलैमान दाऊद का पुत्र है तो इसका क्या मतलब है? तो यीशु के मामले में, यूसुफ उनके वास्तविक पिता नहीं थे, लेकिन वे एक तरह से परिवार में गोद लिए

गए (उनके सौतेले पिता की तरह) पुत्र थे। डेविड और सुलैमान, आप जानते हैं कि सुलैमान, डेविड के पुत्र, आप वास्तविक पुत्रों के बारे में बात कर रहे हैं। लेकिन फिर "पुत्र" शब्द का अर्थ सिर्फ पिता-पुत्र के रिश्ते में पुत्र ही नहीं हो सकता है, बल्कि यह एक हजार साल आगे भी बढ़ सकता है, इसलिए आपको डेविड का पुत्र मिल गया। तो डेविड का पुत्र 1,000 साल आगे बढ़ जाएगा; आपको डेविड पिता मिल गया, ईसा मसीह डेविड के पुत्र (यानी 1,000 साल) हो गए। ईसा मसीह अब्राहम (2000 ईसा पूर्व) के पुत्र थे, यह एक और बात है, लगभग 2,000 साल। इसलिए पुत्र का अर्थ ज़रूरी नहीं है कि 'प्रत्यक्ष पुत्र' हो, पुत्र का अर्थ 1,000 साल हो सकता है, कि आप किसी की संतान हैं, आप किसी के वंशज हैं, इसका मतलब प्रत्यक्ष पुत्र नहीं है।

एक और बात जो हम कहेंगे वह है इसका आध्यात्मिक पुत्र। क्या आपको याद है कि 1 पतरस 5:13 में पतरस ने कहा था कि मार्क उसका पुत्र है? 1 कुरिन्थियों 4:17 में तीमुथियुस को पौलुस का पुत्र कहा गया था। पौलुस ने तीमुथियुस को अपना पुत्र कहा था और हम जानते हैं कि पौलुस तीमुथियुस का पिता नहीं था, लेकिन हम जानते हैं कि वह एक आध्यात्मिक पिता था। इसलिए "पुत्र" शब्द का अर्थ "आध्यात्मिक पुत्र" हो सकता है, या इसका शाब्दिक अर्थ (जैसे पहली पीढ़ी) हो सकता है, लेकिन फिर यह अधिक व्यापक रूप से संतान या वंशजों तक भी जा सकता है। आखिरी बात (और शायद हमारे लिए सबसे महत्वपूर्ण) यह है कि हम कहते हैं कि "पुत्र" का चरित्र हो सकता है। "पुत्र" का अर्थ है "चरित्र है।" तो जब हम कहते हैं, "याकूब और यूहन्ना गरजने वाले पुत्र हैं," इसका क्या मतलब है? इसका मतलब है कि उनके पास चरित्र है, गरजने का गुण है। आपको याद होगा कि ल्यूक की पुस्तक में याकूब और यूहन्ना स्वर्ग से आग बरसाना चाहते थे। इसमें बताया गया है कि वे स्वर्ग से आग बरसाना चाहते थे। इसलिए वे "गरजने वाले पुत्र" हैं। बरनबास; *बर का* अर्थ है "पुत्र," और *नबास* का अर्थ है "सांत्वना।" तो बरनबास "प्रोत्साहन का पुत्र" या "सांत्वना का पुत्र" है। "पुत्र" का अर्थ है कि बरनबास एक प्रोत्साहित करने वाला व्यक्ति है। इसलिए हम आज भी उस वाक्यांश का उपयोग करते हैं; पुत्र - और हम आमतौर पर इसे मेरे दिमाग में नकारात्मक संदर्भ में उपयोग करते हैं, लेकिन पुत्र कुछ या अन्य। आप यह नहीं कह रहे हैं कि उनके माता-पिता में वह गुण था, लेकिन आप यह कह रहे हैं कि उनके माता-पिता में वह गुण था। तो मनुष्य के पुत्र का अर्थ है कि उसके पास मनुष्य का गुण है। इसलिए हम इस

पर गौर करना चाहते हैं। मरकुस-मत्ती अध्याय 16 में लेकिन मरकुस 2:10 में भी कैसरिया फिलिप्पी में यीशु की आत्म-पहचान और उल्लेख स्पष्ट रूप से मिलता है। यीशु कैसरिया फिलिप्पी में आते हैं, वे अपने शिष्यों से पूछते हैं, "लोग मनुष्य के पुत्र को कौन कहते हैं?" इसे देखें: "'लोग मनुष्य के पुत्र को कौन कहते हैं?' उन्होंने उत्तर दिया, 'और मनुष्य का पुत्र कौन है? यीशु ने अपनी पहचान बताते हुए कहा, 'लोग मनुष्य के पुत्र को कौन कहते हैं?' उन्होंने उत्तर दिया, 'कुछ लोग यूहन्ना बपतिस्मा देनेवाला कहते हैं, कुछ लोग एलियाह कहते हैं। फिर भी, अन्य लोग यिर्मयाह या भविष्यद्वक्ताओं में से एक कहते हैं।' लेकिन तुम्हारे बारे में क्या?' उन्होंने पूछा, 'तुम मुझे कौन कहते हो?'" मनुष्य का पुत्र, लोग मनुष्य के पुत्र को कौन कहते हैं, तुम मुझे कौन कहते हो?

पी. मनुष्य के पुत्र की बारीकियाँ – पहचान और अधिकार [50:30-53:36]

अब मैं इस शब्द 'सन ऑफ मैन' की पाँच बारीकियों पर काम करना चाहता हूँ। इसमें पाँच बारीकियाँ या पाँच पहलू होंगे, और मैं इस एक्रोस्टिक का उपयोग करना चाहता हूँ: IASED। तो पहला, मुझे लगता है कि यह उसे मानव जाति के साथ पहचानता है, कि वह मानव का पुत्र है। यानी, यीशु वास्तव में मानव है। इसलिए मैथ्यू अध्याय 8 श्लोक 20 में कहा गया है, "लोमड़ियों के पास बिल होते हैं, आकाश के पक्षियों के पास घोंसले होते हैं, लेकिन मनुष्य के पुत्र के पास सिर रखने की जगह नहीं है।" दूसरे शब्दों में वह जो कहने की कोशिश कर रहा है वह यह है कि मनुष्य का पुत्र बहुत ही मानवीय है और न केवल वह मानव है बल्कि वह एक मानव प्राणी है और उसके पास सिर रखने की जगह नहीं है। इसलिए यह मानव जाति के साथ उसकी पहचान को दर्शाता है, कि वह पूरी तरह से मानव जाति के साथ पहचान रखता है, यहाँ तक कि आवास की कमी के बिंदु तक।

अधिकार, मनुष्य के पुत्र की इस बात का दूसरा पहलू अधिकार की यह धारणा है। मार्क अध्याय 2 पद 10 में यह कहा गया है: "लकवाग्रस्त व्यक्ति से क्या कहना आसान है," क्या आपको वहाँ की कहानी याद है? यह व्यक्ति लकवाग्रस्त है; वह चल नहीं सकता। जाहिर तौर पर उसके चार दोस्त हैं, या हम नहीं जानते कि कितने हैं, लेकिन उसके दोस्त हैं। उसके दोस्त फिर उसे इस खाट पर ले जाते हैं; वे खाट को यीशु के पास नहीं ले जा सकते क्योंकि घर लोगों से भरा हुआ है। तो फिर वे छत पर चढ़ जाते हैं - अब आपको समझना होगा कि यह न्यू इंग्लैंड नहीं है जहाँ आपकी

छतें खड़ी हैं क्योंकि आपके यहाँ बहुत बर्फ है, छतें सपाट हैं। इसलिए वे सपाट छत पर चले गए, और यह मिट्टी से बना है (वहाँ सब कुछ मिट्टी और पत्थर से बना है, जिसमें आवास भी है। वे छत से नीचे खुदाई करते हैं - और मुझे हमेशा आश्चर्य होता है कि यीशु क्या सोच रहे थे जब वह उपदेश दे रहे थे और लोग छत से खुदाई कर रहे थे और वह सारी मिट्टी और प्लास्टर चीजों पर नीचे आ रही थी। फिर अचानक वे इस लड़के को रस्सियों या किसी चीज के साथ एक चटाई पर यीशु की गोद में गिरा देते हैं। हर कोई उम्मीद कर रहा है कि यीशु कहेंगे, "उठो और चलो, मैंने तुम्हें ठीक कर दिया है।" यीशु क्या कहते हैं? यीशु ऐसा नहीं करते हैं। "लकवाग्रस्त व्यक्ति से क्या कहना आसान है? 'तुम्हारे पाप क्षमा हुए' या यह कहना कि 'उठो और अपनी खाट उठाओ और चलो'? परन्तु इसलिये कि तुम जान सको कि मनुष्य के पुत्र को पृथ्वी पर पाप क्षमा करने का अधिकार है, उसने लकवाग्रस्त व्यक्ति से कहा, मैं तुझसे कहता हूँ उठो, अपनी खाट उठाओ और अपने घर जाओ।" हर कोई आश्चर्यचकित था। वे उसके पास आए और कहा, "वाह, वह पाप क्षमा कर सकता है? केवल परमेश्वर के अलावा और कौन पाप क्षमा कर सकता है?" यीशु, कि यीशु में पाप क्षमा करने की क्षमता है, लेकिन यीशु लकवाग्रस्त व्यक्ति को यह बोलकर भी ठीक कर सकता है, "उठो, अपनी खाट उठाओ और घर जाओ।" और यह आदमी यीशु के बोले गए वचन से ऐसा करता है। तो मनुष्य के पुत्र के पास पृथ्वी पर ये सब करने का अधिकार है। इसलिए यहाँ मनुष्य के पुत्र के साथ शब्द अधिकार की स्थिति है।

प्रश्न: मनुष्य के पुत्र की बारीकियाँ – पीड़ा [53:36-57:45]

अब यह एक है, मुझे लगता है: "बहुत दिलचस्प है। पुराने नियम में मसीहा के संबंध में आपके पास दो तरह के विचार हैं। आपके पास वह है जिसे पुराने समय में यहूदी लोग मसीहा बेन-डेविड कहते थे। *बेन* का अर्थ है 'पुत्र', मसीहा, *मेशिया*, जिसका अर्थ है अभिषिक्त व्यक्ति; मसीहा, अभिषिक्त व्यक्ति। बेन-डेविड 2 शमूएल 7:14 से "दाऊद का पुत्र" था और उसके बाद जहाँ परमेश्वर कहता है कि, "आज मैं तुम्हारे लिए एक घर बनाने जा रहा हूँ, और वह घर हमेशा के लिए रहने वाला है। तुम्हारे वंशजों में से एक, दाऊद, इस्राएल के सिंहासन पर हमेशा के लिए बैठने वाला है।" उन्होंने उसे "दाऊद का पुत्र" कहा। तो आप इस मसीहा को आते हुए देखते हैं और शेर मेमने

के साथ लेटा हुआ है और उसके साथ धार्मिकता और न्याय की छड़ी के साथ शासन कर रहा है, और पृथ्वी पर शांति और सद्भाव आ रहा है। आपको इस आने वाले मसीहा के भविष्य की ये सभी अद्भुत भविष्यवाणियाँ मिलती हैं जिनकी उन्हें तलाश है।

दूसरी ओर, तथापि, और फिर यह पहेली, पुराने नियम में मसीहा का एक और पहलू है जो वास्तव में नकारात्मक है। यह पीड़ित सेवक मसीहा है, आप इसे यशायाह 53 में एक शानदार तरीके से देख सकते हैं: "वह वध के लिए ले जाई गई भेड़ की तरह होना चाहिए ... और उसके कोड़ों से हम चंगे हो जाते हैं।" उसके कोड़ों से हम चंगे हो जाते हैं, हम सब भेड़ों की तरह भटक गए थे 'और प्रभु ने हम सब के अधर्म का बोझ उस पर डाल दिया,' यशायाह 53। कुछ लोगों ने कहा कि तब एक मसीहा बेन-जोसेफ था। आपको याद होगा कि कैसे यूसुफ को जेल में डाला गया था। यूसुफ को मिस्र में एक गुलाम के रूप में बेचा गया था और यूसुफ को जेल में डाल दिया गया था और उन्होंने इसे यूसुफ के बेटे मसीहा बेन-जोसेफ का नाम दिया।

मार्क की पुस्तक में मनुष्य के पुत्र शब्द में पीड़ा की धारणा शामिल है। तो यह मसीहा, मनुष्य का पुत्र, मसीहा बेन-डेविड की धारणा नहीं है, यह आने वाला राजा है जो शासन करने जा रहा है, लेकिन इसमें यह मसीहा बेन-जोसेफ, यह पीड़ित सेवक भी है। अब मैं आपको मार्क की कुछ आयतें पढ़कर सुनाता हूँ, ये बहुत बढ़िया आयतें हैं, "फिर वह उन्हें सिखाने लगा कि मनुष्य के पुत्र को बहुत सी बातें सहनी होंगी, पुरनियों, मुख्य याजकों और व्यवस्था के शिक्षकों द्वारा अस्वीकार किया जाएगा, और उसे मार दिया जाएगा और तीन दिन बाद फिर से जी उठेगा। उसने इस बारे में स्पष्ट रूप से बात की, फिर पतरस ने उसे अपने पास ले जाकर डाँटना शुरू किया, "शैतान, मेरे सामने से दूर हो जा," यीशु ने उससे कहा, 'तू परमेश्वर की बातें नहीं, बल्कि मनुष्यों की बातें सोचता है।'" यह कहता है कि मनुष्य के पुत्र को पीड़ा सहनी होगी और इसलिए आपको यह धारणा मिलती है कि यीशु मनुष्य का पुत्र है, कि पीड़ा उसका एक हिस्सा है। तो यह 8:31, 9:31 और 10:31 की तरह है, लगभग तीन पंक्ति में। 9:31 यह कहता है, उसे मार दिया जाएगा, वह उनसे कहता है, "मनुष्य का पुत्र मनुष्यों के हाथों में धोखा दिया जाएगा, वे उसे मार देंगे और तीन दिन बाद वह जी उठेगा। लेकिन वे समझ नहीं पाए कि उसका क्या मतलब था और वे उससे इस बारे में पूछने से डरते थे।" ध्यान दें कि शिष्य पूछने से डरते हैं। हम बाद में डर की उस धारणा पर वापस आएंगे।

फिर अध्याय 10 पद 33 में, उसे धोखा दिया जाएगा। “फिर से उसने बारह को एक तरफ ले जाकर उन्हें बताया कि उसके साथ क्या होने वाला था। ‘हम यरूशलेम जा रहे हैं,’ उसने कहा, ‘और मनुष्य का पुत्र [मनुष्य के पुत्र के रूप में खुद की पहचान के रूप में फिर से खुद का उपयोग करते हुए] मुख्य याजकों, व्यवस्था के शिक्षकों को धोखा दिया जाएगा। वे उसे मौत की सजा देंगे और उसे सौंप देंगे।” तो मूल रूप से विश्वासघात के बारे में बात करते हुए, कि यहूदा उसे धोखा देगा, अन्यजाति उसका मजाक उड़ाएंगे और उस पर थूकेंगे, उसे कोड़े मारेंगे और उसे मार देंगे, और तीन दिन बाद वह मृतकों में से जी उठेगा [अच्छी खबर]। तो मनुष्य के पुत्र के पास मार्क की पुस्तक में पीड़ित सेवक की यह धारणा है, और यह मार्क की पुस्तक में एक बड़ा विषय है।

आर. मनुष्य के पुत्र की बारीकियाँ – परलोकीय और दिव्य [57:45-62:54]

अब, यह वास्तव में एक मुश्किल सवाल है, और आपको इसे निश्चित रूप से समझना चाहिए। यह मनुष्य का पुत्र है। अब जब आप कहते हैं कि एस्कैटोलॉजिकल, तो आप उस शब्द से क्या मतलब रखते हैं? एस्कैटोलॉजिकल, *एस्कैटन* शब्द का अर्थ है "अंत।" तो एस्कैटोलॉजी अंत समय का अध्ययन है। जो लोग दानियेल और रहस्योद्घाटन की पुस्तक में रुचि रखते हैं, यह अजीब बात है कि कुछ चर्च रोमियों और गलातियों में रुचि रखते हैं और सब कुछ यीशु के बारे में पॉल के दृष्टिकोण के माध्यम से समझा जाना चाहिए। बाकी बाइबिल रोमियों और गलातियों के माध्यम से समझी जाती है और फिर वे इस तरह के व्याख्यात्मक पर गर्व करते हैं। कुछ अन्य लोग हैं जो एस्कैटोलॉजिकल में अधिक रुचि रखते हैं। वे दानियेल और रहस्योद्घाटन के संबंध में पूरी बाइबिल को समझते हैं। तो आप विभिन्न स्कूलों को भी देख सकते हैं और विभिन्न स्कूल रोमियों और गलातियों पर जोर देंगे और अन्य स्कूल दानियेल और रहस्योद्घाटन पर जोर देंगे। मेरा कहना है कि हमें पूरी बाइबिल को पूरी बाइबिल के माध्यम से समझने की जरूरत है। बाइबल को समझने के लिए इन दो पुस्तकों का उपयोग करने के बजाय उत्पत्ति से शुरू करना और वास्तव में इसे जिस तरह से लिखा गया था, उसे पढ़ना सबसे अच्छा है। इस युगांतशास्त्रीय पर वापस जाते हुए, आइए यहाँ यीशु को देखें। यह वास्तव में कुछ अविश्वसनीय चीजें हैं। मार्क 14:61; यह अंत में है, यीशु, महायाजक द्वारा उससे पूछे जाने के बाद - इसलिए महायाजक उसे मौत की सजा देने जा रहा है

और उसे सूली पर चढ़ाया जाएगा। महायाजक ने कहा, "क्या तुम मसीह हो, धन्य का पुत्र?" "मैं हूँ।" यीशु ने कहा। क्या तुम मसीह हो? मसीह *मसीहा* है, क्या तुम मसीहा हो, धन्य का पुत्र? 'मैं हूँ,' यीशु ने कहा, "और तुम मनुष्य के पुत्र को देखोगे।" देखें कि वह इसे कैसे बदलता है? क्या तुम मसीह हो, धन्य का पुत्र, धन्य का उपयोग भगवान के संदर्भ में किया जाता है (क्या तुम भगवान के पुत्र हो?)। "मैं हूँ," यीशु ने कहा, "और तुम मनुष्य के पुत्र को शक्तिशाली के दाहिने हाथ पर बैठे, स्वर्ग के बादलों में आते हुए देखोगे।" महायाजक ने अपने कपड़े फाड़े। 'हमें और गवाहों की क्या ज़रूरत है?' उसने कहा, 'तुमने उसकी निन्दा सुनी है।' अब यह निन्दा कैसी है? खैर, यह पता चला कि यीशु दानिय्येल 7:13 से उद्धृत कर रहे हैं, "तुम मनुष्य के पुत्र को बादलों में आते देखोगे।" दानिय्येल 7:13 के लिए (आपको पुराने नियम की पृष्ठभूमि को समझने की ज़रूरत है) - पुराने नियम में बादलों पर कौन सवार है? बादलों पर कौन आता है? बादलों के रथों पर कौन सवार है? खैर, आप कहते हैं, पुराने नियम में, यह बाल था जो बादलों पर सवार था, लेकिन फिर आप कहते हैं, "नहीं, पुराने नियम ने भजन 68 जैसी जगहों पर इसे सही किया है, जहाँ यह कहा गया है, 'यहोवा वह है जो बादलों पर सवार है।'" परमेश्वर, यहोवा, याहवे, प्रभु वह है जो बादलों पर सवार है। अब यीशु कहते हैं कि आप मनुष्य के पुत्र को देखने जा रहे हैं - वह खुद को क्या कहता है? - "मनुष्य का पुत्र।" आप मनुष्य के पुत्र को इन बादलों पर नीचे आते देखेंगे। पुजारियों ने समझा, एक उच्च पुजारी ने ठीक से समझा कि यीशु क्या कह रहे थे। यीशु कह रहे थे कि मनुष्य के पुत्र के रूप में, दानिय्येल की पुस्तक में, वे अंतिम निर्णय के लिए स्वर्ग के बादलों में आ रहे थे, कि यीशु कह रहे थे "मैं ईश्वर हूँ।" इसलिए उच्च पुजारी ने अपने कपड़े फाड़े और कहा, "यह ईशनिन्दा है।" वास्तव में, मैं इसे ईशनिन्दा नहीं कहूँगा क्योंकि वे ईश्वर थे, लेकिन फिर यीशु, आप देख सकते हैं कि वे क्यों भड़के; क्योंकि वे मनुष्य के पुत्र के अंश को उद्धृत कर रहे थे। मनुष्य का पुत्र, उस शीर्षक का उल्लेख दानिय्येल 7:13 में किया गया है, और इसका संदर्भ बादलों पर आने वाले ईश्वर से है। इसलिए, "तुमने उसकी ईशनिन्दा सुनी," यह सुंदर है कि कैसे यीशु ने अपने देवता को संदर्भित करने के लिए इस शब्द, मनुष्य के पुत्र का उपयोग किया। उच्च पुजारी इस पर भड़क गए।

अंत में, यह हमारा अंतिम बिंदु है (और यह पिछले बिंदु के समान ही है), अर्थात्, "मनुष्य का पुत्र" शब्द वास्तव में देवता को संदर्भित करता है। तो आपको यह विचार मिलता है कि स्वर्ग के

बादलों में आने वाले मनुष्य के पुत्र वास्तव में देवता को संदर्भित करते हैं। तो "मनुष्य का पुत्र" शब्द के कई पहलू हैं, और यह मूल रूप से मानव के साथ पहचान रखता है, कि वह पूरी तरह से मानव है, वह महसूस करता है, उसके पास अपना सिर रखने के लिए कहीं नहीं है; वह आधिकारिक है, वह अपने वचन से लोगों को ठीक करता है, वह पापों को क्षमा करता है; वह पीड़ित सेवक है, वह मसीहा बेन-जोसेफ है - वह पीड़ित है, उसे धोखा दिया जा रहा है; वह युगांतकारी है, वह दुनिया के अंत में स्वर्ग के बादलों में आ रहा है, और चीजों को सही करने जा रहा है। मनुष्य का पुत्र सब कुछ सही करने जा रहा है। तो ये इस शब्द "मनुष्य के पुत्र" के पहलू हैं। यह एक जटिल शब्द है। यीशु स्वयं को 'मनुष्य का पुत्र' शब्द से पहचानते हैं, और इसलिए यह सचमुच एक महत्वपूर्ण शब्द है।

स. मसीहाई रहस्य क्या है? [62:54-64:58]

अब, हमारा अगला बड़ा विषय, और यह है - हम बस कुछ मिनट तक चलते रहेंगे और यहीं पर समाप्त करेंगे - यह मसीहाई रहस्य की धारणा है। आप में से जो भी मार्क की पुस्तक पढ़ चुके हैं, वे जानते होंगे कि यह एक समस्या हो सकती है। यीशु ने लोगों से यह क्यों कहा कि वे यह न बताएं कि वे कौन थे? तो मसीहाई रहस्य क्या है? यीशु ने लोगों से यह क्यों कहा कि वे यह न बताएं कि उन्होंने क्या किया? वे किसी को ठीक करते और फिर कहते, "अरे, इसके बारे में किसी को मत बताना।" वास्तव में, आमतौर पर जब वे कहते हैं कि इसके बारे में किसी को मत बताना, तो वे आमतौर पर बाहर जाकर सभी को बता देते हैं। इसलिए कुछ लोग सोचते हैं कि यह एक तरह का रिवर्स साइकोलॉजी है। यीशु ने कहा कि किसी को मत बताना, ताकि वे उन्हें बता दें। मुझे लगता है कि आपको इस दृष्टिकोण से सावधान रहना चाहिए, लेकिन यीशु ऐसा करते हैं - और अगर आपने इसे पढ़ा है, तो आपने शायद सोचा होगा कि यीशु ऐसा क्यों कहते हैं?

मैं आपको कुछ उदाहरण देता हूँ। मार्क 3:11 में यह कहा गया है: "जब दुष्टात्माओं ने उसे देखा, तो वे उसके सामने गिर पड़ीं और चिल्लाने लगीं, 'तू परमेश्वर का पुत्र है।'" अब, क्या स्पष्ट कथन है, आपको दुष्टात्माएँ गिरती हुई दिखाई देती हैं, जो कहती हैं, "तू परमेश्वर का पुत्र है," "लेकिन उसने उन्हें सख्त आदेश दिया कि वे न बताएँ कि वह कौन है।" यहाँ मार्क 1:44 से एक उदाहरण है, यह तब है जब यीशु एक कोढ़ी को ठीक कर रहे हैं। "तब यीशु ने उसे तुरंत एक सख्त

चेतावनी के साथ भेज दिया: 'देखो, यह किसी को मत बताना, लेकिन अपने आप को पुजारी को दिखाओ और उन बलिदानों को चढ़ाओ जिन्हें मूसा ने तुम्हारे शुद्ध होने के लिए आदेश दिया था ताकि उनके लिए गवाही हो।' इसके बजाय, वह खुलकर बात करने के लिए बाहर चला गया और खबर फैलाई।" नतीजतन, क्योंकि यह आदमी बाहर गया और इस सामान को प्रसारित किया, यह कहता है कि "यीशु अब शहर में खुले तौर पर प्रवेश नहीं कर सकता था।" तो जाहिर है कि भीड़ इतनी बड़ी हो गई कि वह इसे संभाल नहीं सका क्योंकि इस आदमी ने सामान को चारों ओर फैला दिया। तो फिर आप इस तथाकथित मसीहाई रहस्य के साथ कैसे काम करते हैं, कि यीशु ने लोगों से कुछ भी न कहने के लिए कहा था?

टी. मसीहाई रहस्य का संभावित समाधान [64:58-70:48]

जी: कम्बाइन एसटी; 62:54-70:48; मेसिअनिक सीक्रेट

मैं जो करना चाहता हूँ वह यह है कि मैं आपको मूल रूप से यह सुझाव देना चाहता हूँ कि यह एक अखंड अवधारणा नहीं है। इसमें वास्तव में तीन अलग-अलग श्रोता शामिल हैं जिन्हें यीशु संबोधित करते हुए कहते हैं, "किसी को मत बताना।" श्रोताओं में से एक वह होगा जिसे उसने ठीक किया था। वे कहते हैं कि जिसे उसने ठीक किया वह कोढ़ी था, और उसने कोढ़ी से कहा। "किसी को मत बताना," और वह उन्हें उनके कोढ़ से शुद्ध करता है। वह कहता है, "जाओ अपना शो खुद पुजारी को दिखाओ, पुजारी तुम्हें शुद्ध या अशुद्ध घोषित करेगा।" यह पुराने नियम का तरीका था। इसलिए वह उन लोगों से कहता है जो ठीक हो गए हैं कि ऐसा न करें। अब यीशु ने उन्हें ऐसा न करने के लिए क्यों कहा? यीशु उन्हें पुजारी के पास जाने के लिए क्यों कह रहा है? मुझे लगता है कि यीशु एक जादूगर के रूप में जाना नहीं चाहता था, न ही वह चाहता था कि लोग उसके पास सिर्फ इसलिए आएँ क्योंकि वह एक जादूगर था और वह उन पर कोई जादू करेगा। इसलिए क्योंकि ये लोग ठीक हो रहे थे, इसलिए वह यह सब नहीं चाहता था। अब यहाँ हम जो समस्या देखते हैं, वह यह है कि जब चंगे हुए लोग बाहर चले गए, तो यीशु अब शहर में प्रवेश नहीं कर सकते थे। भीड़ इतनी बड़ी थी कि वह शहर में प्रवेश भी नहीं कर सकते थे। इसलिए, मुझे लगता है, यीशु ने कहा, "इसे शांत रखो," क्योंकि वह एक जादूगर के रूप में जाना नहीं चाहते थे। इसलिए मुझे लगता है कि

चंगे हुए व्यक्ति से, उन्होंने कहा, "ठीक है, मुझे पता है कि मैंने तुम्हें चंगा किया है, लेकिन हर किसी को मत बताना, क्योंकि मैं नहीं चाहता कि वे यह उम्मीद करें कि मैं बस सबको चंगा करने जा रहा हूँ और मैं एक जादूगर हूँ।"

दूसरे वर्ग के लोग जिन्हें वे कुछ न कहने के लिए कहते हैं, वे राक्षस हैं। कई बार राक्षस गिरकर कहते हैं, "तुम ईश्वर के पुत्र हो," और यीशु कहते हैं, "कुछ मत कहो।" मुझे लगता है कि राक्षस, मुझे लगता है कि मूल रूप से राक्षस यह नहीं बताते कि वे कौन हैं क्योंकि राक्षस शैतान और सभी बुरी शक्तियों का प्रतिनिधित्व करते हैं और वे कह रहे हैं कि यह खराब पीआर है। "मैं नहीं चाहता कि ये राक्षस बताएं कि मैं कौन हूँ क्योंकि यह खराब पीआर है।" यह ऐसा है जैसे कि हिटलर कहे कि तुम एक अच्छे आदमी हो। हिटलर कहता है कि मैं एक अच्छा आदमी हूँ--6,000,000 लोगों को मारने के बाद कहता है कि मैं एक अच्छा आदमी हूँ। कोई बुरा व्यक्ति आपके बारे में कुछ अच्छा कहता है तो शायद आप भी बुरे हैं। इसलिए वे कहते हैं, "मैं उस तरह का पीआर नहीं चाहता क्योंकि राक्षस झूठे, धोखेबाज और बुरे हैं।" हर कोई जानता है कि वे बुरे हैं और वे उनके बुरे शब्दों की गवाही नहीं चाहते। इसलिए वह उनसे कहता है, "राक्षसों, लोगों को मत बताओ कि मैं परमेश्वर का पुत्र हूँ; यह तुम्हारे अधिकार क्षेत्र में नहीं है।"

अंत में, शिष्यों ने भी, और यह दिलचस्प है, मुझे देखना है कि क्या मैं आपके लिए इस श्लोक को निकाल सकता हूँ। अध्याय 9 में शिष्यों के साथ, मार्क 9:9 में यीशु ने उनसे कहा कि जब तक मनुष्य का पुत्र मृतकों में से नहीं उठ जाता, तब तक वे किसी को न बताएं कि उन्होंने क्या देखा (उन्होंने अभी-अभी रूपांतरण देखा था)। अब इसका क्या मतलब है? मुझे लगता है कि शिष्यों को यीशु के बारे में बहुत कम जानकारी थी। कई जगहों पर शिष्यों से यीशु कहते हैं, "तुम लोग अभी भी खमीर के बारे में नहीं समझते हो, तुम अभी भी इस चीज़ को नहीं समझते हो।" वे रूपांतरण के समय ऊपर हैं; वे मूसा, एलिय्याह और यीशु के लिए तीन झोपड़ियाँ बनाना चाहते हैं। उन्हें अभी भी वास्तव में कोई सुराग नहीं है कि क्या करना है, कि परमेश्वर का पुत्र मनुष्य का पुत्र है। मोटे तौर पर, वह शिष्यों से कहता है कि पुनरुत्थान के बाद तक किसी को न बताएं। पुनरुत्थान के बाद उन्हें इस बारे में सही दृष्टि मिलेगी कि यीशु वास्तव में कौन थे और उन्हें क्या नियति दी गई थी, उन्हें क्या बुलाया गया था और उन्हें क्या करना था। इसलिए मैं सोचता हूँ कि शिष्यों के लिए यह समझने की

बात है जब तक कि उन्हें पुनरुत्थान के विषय में पवित्र आत्मा का ज्ञान प्राप्त न हो जाए।

तो आप इन तीन समूहों के लोगों को इस मसीहाई रहस्य में संबोधित करते हुए पाते हैं, "इसे अपनी टोपी के नीचे रखो।" चंगे हुए लोगों के लिए, यीशु एक जादूगर के रूप में नहीं जाना चाहता; दुष्टात्माओं के लिए, वह बुरी संगति के कारण उनकी स्वीकृति नहीं चाहता; और शिष्यों के लिए, मुख्यतः इसलिए क्योंकि शिष्यों को यह समझने की आवश्यकता है कि वह कौन है, इससे पहले कि वे बाहर जाकर रूपांतरण के बारे में बताएं और उन्हें बेहतर ढंग से समझने की आवश्यकता है।

तो आज मैं मार्क की पुस्तक में यहीं तक जाना चाहता हूँ। तो हमने मार्क के व्यक्तित्व, पॉल के साथ उसके रिश्ते, पीटर के साथ उसके रिश्ते को देखा है। हमने मसीह के ईश्वरत्व के संदर्भ में मार्क को देखा है और उन पहले कुछ छंदों को देखा है और कैसे वह यशायाह की भविष्यवाणी को उद्धृत करता है जो निर्गमन और मलाकी से निकलती है; और यशायाह से वह यीशु मसीह को एक ऐसे व्यक्ति के रूप में प्रस्तुत करता है जिसके लिए परमेश्वर, यहोवा के रूप में मार्ग पहले से तैयार है। फिर हमने "मनुष्य के पुत्र" शब्द की भी जांच की। हमने अब मसीहाई रहस्य को भी देखा है। मार्क की पुस्तक में वे दो चीजें वास्तव में महत्वपूर्ण हैं। ठीक है, हम इसे यहीं समाप्त करते हैं। हम अगली बार मार्क की पुस्तक को उठाएंगे और समाप्त करेंगे। हमारे साथ जुड़ने के लिए धन्यवाद।

जेसी स्टील द्वारा
लिखित बेन बोडेन द्वारा
संपादित टेड हिल्लेब्रांट द्वारा संपादित रफ